Toppersnotes
Unleash the topper in you

UPPSC

Prelims

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

भाग – 1

प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	प्रारंभिक इतिहास	1
2	सिंधु घाटी सभ्यता	5
3	वैदिक काल (1500–600 ईसा पूर्व)	11
4	बौद्ध धर्म और जैन धर्म	17
5	मगध साम्राज्य	29
6	मौर्य साम्राज्य	36
7	मध्य एशियाई संघर्ष	42
8	सातवाहन वंश	48
9	गुप्त साम्राज्य	52
10	हर्षवर्धन	60
11	दक्षिण के राज्य	65
12	संगम युग	72
13	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल	78
14	भारत में इस्लाम का आगमन	87
15	दिल्ली सल्तनत	90
16	विजयनगर और बहमनी राज्य	100
17	मुगल साम्राज्य	107
18	मराठा साम्राज्य	117
19	भक्ति आन्दोलन	122

1 CHAPTER प्रारंभिक इतिहास

इतिहास को कालक्रमानुसार तीन भागों में बाँटा गया है:

- प्रागैतिहासिक काल (Prehistory): इस काल में लेखन का आविष्कार नहीं हुआ था। इसे आगे तीन पाषाण काल और दो धातु काल में विभाजित किया गया ।
- आद्य-इतिहास (Proto-history): यह प्रागैतिहासिक काल और इतिहास के बीच के उस काल को संदर्भित करता है जब लेखन शैली तो मौजूद थी लेकिन इसकी लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। हड़प्पा लिपि इसका एक प्रमुख उदाहरण है।
- ऐतिहासिक काल (History): इसमें लेखन का आविष्कार हो चुका था, इसीलिए लिखित अभिलेखों एवं पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर इसका अध्ययन किया जाता है।

प्रागैतिहासिक काल

पाषाण काल को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा गया है-

1. **पुरापाषाण काल (पैलियोलिथिक):** 5,00,000 – 10,000 ईसा पूर्व
2. **उत्तर/मध्य पाषाण काल (मेसोलिथिक):** 10,000 – 6,000 ईसा पूर्व
3. **नवपाषाण काल (नियोलिथिक):** 6,000 – 1,000 ईसा पूर्व

1. पुरापाषाण काल (5,00,000 – 10,000 ईसा पूर्व)

- पुरापाषाण काल, वह काल है जिसमे मानव ने सबसे पहले पत्थर के ओजार बनाना प्रारंभ किया था और कार्यों जैसे आग लगाना, शिकार करना एवं गुफा बनाने आदि के लिए पत्थर पर ही निर्भर था || इसी समय होमो इरेक्टस अफ्रीका से भारत आए थे।
- **प्रयुक्त औजार:** क्वार्टजाइट से बनी हाथ की कुल्हाड़ियाँ, क्लीवर, चॉपर और खुरचनी।
- **प्रमुख स्थल और मुख्य विशेषताएँ:**
  - ✓ **नर्मदा घाटी:** नर्मदा मानव जीवाश्म भारत में मिले सबसे प्राचीन मानव पूर्वज के जीवाश्म है।
  - ✓ **सोन घाटी (वर्तमान पाकिस्तान):** यह भारत के सबसे प्राचीन पुरापाषाण स्थलों में से एक है।
  - ✓ **बेलन घाटी (मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश):** पुरापाषाण और मध्यपाषाण दोनों कालों के अवशेष तथा प्रारंभिक सूक्ष्म औजार (माइक्रोलिथिक) और मानव निवास के प्रमाण मिले है।
  - ✓ **पल्लवरम (तमिलनाडु):** यहाँ से 1863 में रॉबर्ट ब्रूस फूट द्वारा खोजे गए प्रारंभिक पत्थर के औजार मिले है।
  - ✓ **अथिरमपक्कम, पल्लवरम, गुडियाम (चेन्नई):** यहाँ से निम्न पुरापाषाण संस्कृति के प्रमाण, हाथ की कुल्हाड़ी और क्लीवर जैसे औजार मिले है।
  - ✓ **हंसगी घाटी, इसमपुर (कर्नाटक):** यहाँ से अचेउलियन औज़ारों (उन्नत पत्थर के औजार) की उपस्थिति तथा औज़ार निर्माण के व्यापक साक्ष्य उपलब्ध हुए है।
  - ✓ **भीमबेटका (मध्य प्रदेश): यह यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल है** जहाँ से तीनों पाषाण काल के साक्ष्ययुक्त शैलाश्रय मिले हैं।
  - ✓ **होशंगाबाद (मध्य प्रदेश):** यहाँ नर्मदा मानव जीवाश्म स्थल के साक्ष्य हैं ।

पुरापाषाण काल के चरण

भारत में पुरापाषाण काल को लोगों द्वारा उपयोग किये जाने वाले पत्थर के औजारों की प्रकृति के अनुसार तीन चरणों में विभाजित किया गया है।

- **निम्न पुरापाषाण काल (20,00,000 – 60,000 वर्ष पूर्व):** इस काल में होमो इरेक्टस भारत में रहते थे।
- **मध्य पुरापाषाण काल (3,85,000 – 40,000 वर्ष पूर्व):** इस काल में खुरचनी, चॉपर और भाले जैसे औजारों का उपयोग शुरू हुआ।
- **उच्च पुरापाषाण काल (40,000 – 10,000 वर्ष पूर्व):** इस समय आधुनिक मानव का विकास हुआ तथा सूक्ष्म औजार (माइक्रोलिथ) और शैल चित्रकला (रॉक आर्ट) की शुरुआत हुई।

2. मध्य पाषाण काल (10,000 – 6,000 ईसा पूर्व)

- **जलवायु और जीवन:** हिमयुग के बाद मानव समूह अधिक गतिशील हो गए और मानसून प्रतिरूप विकसित हुआ।
- **औजार:** छोटे जानवरों का शिकार करने के लिए सूक्ष्म पाषाण औजारों (माइक्रोलिथिक टूल्स) का उपयोग किया जाने लगा।
- **प्रमुख स्थल:**
  - ✓ **पैसरा (बिहार):** मध्यपाषाण संस्कृति के प्रमाण मिलते हैं ।
  - ✓ **लंघनाज (गुजरात):** शैलाश्रय स्थल मिलते हैं ।
  - ✓ **बाघोर द्वितीय, चोपानी मांडो, सराय नाहर राय, महदहा, दमदमा (उत्तर प्रदेश):** अर्ध-स्थायी बस्तियों और प्रारंभिक समाधि (दफन) प्रथाओं के प्रमाण मिलते हैं ।
  - ✓ **संकनाकल्लु, किब्बनहल्ली (कर्नाटक):** मध्यपाषाणकालीन औजारों के प्रमाण मिलते हैं ।
  - ✓ **लेखकिया, बाघई खोर (उत्तर प्रदेश):** मध्यपाषाणकालीन उपकरणों वाले शैलाश्रय स्थल मिलते हैं ।
  - ✓ **आदमगढ़, भीमबेटका (मध्य प्रदेश):** शैलाश्रयों और मध्यपाषाणकालीन औजारों के प्रमाण मिलते हैं ।
  - ✓ **तटीय स्थल:** मुंबई, थूथुकुडी (तमिलनाडु) और विशाखापत्तनम आदि आते हैं ।

3. नवपाषाण काल (6,000 – 1,000 ईसा पूर्व)

- इस काल में कृषि की शुरुआत हुई, पशुओं को पालतू बनाया गया और स्थायी बस्तियों का निर्माण होने लगा।
- **औजार:** इस समय लोग पॉलिश किए हुए पत्थरों के औजार, कुल्हाड़ियों और सूक्ष्म धार वाले औजारों का (माइक्रोलिथ ब्लेड) उपयोग करते थे।
- **प्रमुख स्थल:**
  - ✓ **मेहरगढ़ (पाकिस्तान):** नवपाषाण संस्कृति का सबसे प्राचीन प्रमाण, गेहूं और जौ की खेती तथा पालतू जानवरों के साक्ष्य यहाँ पाए गये हैं ।
  - ✓ **बुर्जहोम (कश्मीर):** गड्ढेनुमा आवासों, ताँबे के औज़ारों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं ।
  - ✓ **लहुरादेवा (उत्तर प्रदेश):** लगभग 6500 ईसा पूर्व में धान की सबसे प्रारंभिक खेती के प्रमाण प्राप्त हुए हैं ।
  - ✓ **चिरांद और सेनुवार (बिहार):** पौधों और पशुओं को पालतू बनाने के प्रारंभिक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं ।

आद्य ऐतिहासिक काल

- इस काल में पारंपरिक पत्थर के औजारों के साथ-साथ तांबे के औजारों का उपयोग शुरू हुआ। यह धातुकर्म के विकास की दिशा में पहला कदम था।
- **ताम्रपाषाण काल (2600 – 1200 ईसा पूर्व)**
  - ✓ ताम्रपाषाण काल, **प्रागैतिहासिक काल** व **ऐतिहासिक काल** के मध्य एक संक्रमण का काल था, जब मनुष्यों ने पत्थर के औजारों के साथ-साथ तांबे के औजारों का उपयोग शुरू किया और मनुष्य ने खाना प्राप्त करने के लिए खेती करना आरंभ कर दिया था।। यह काल धातु उपयोग और अधिक जटिल समाजों के विकास की प्रारंभिक अवस्था को दर्शाता है।

✓ **प्रमुख स्थल:**

- **आहड़, गिलुंड, गणेश्वर (राजस्थान):** तांबे के औजारों का निर्माण, धातुकर्म और हड़प्पा सभ्यता के साथ व्यापार के प्रमाण।
- **जोरवे (महाराष्ट्र):** तांबे के औजार और प्रारंभिक कृषि के प्रमाण।
- **ईनामगाँव (महाराष्ट्र):** किलेबंद बस्तियों और खाइयों के प्रमाण।

क्या आप जानते हैं?

➢ जोरवे संस्कृति दक्कन क्षेत्र की एक प्रमुख ताम्रपाषाण संस्कृति थी, जो विशेष रूप से महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में फैली हुई थी।

➢ लाल-नारंगी रंग के बर्तनों पर काले ज्यामितीय डिज़ाइन, योजनाबद्ध आयताकार मिट्टी के घर और कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था, इसकी पहचान के प्रमुख आधार थे। कृषि में ज्वार जैसी फसलें और पालतू जानवर शामिल थे।

➢ उत्तर-दक्षिण दिशा में कलश रखकर गड्ढे में दफनाना एक प्रमुख अंत्येष्टि प्रथा थी।

ऐतिहासिक काल

➢ इस काल की शुरुवात लिखित अभिलेखों की उपलब्धता से मानी जाती है | साहित्यिक ग्रंथ, शिलालेख और सिक्के पुरातात्विक स्तोत्र इसके पूरक हैं।

➢ लौह युग/वैदिक युग की शुरुआत को ही ऐतिहासिक काल की शुरुआत माना जाता है।

लौह युग (1100 – 800 ईसा पूर्व)

➢ **कांस्य युग** के बाद का **लौह युग** एक प्रागैतिहासिक काल है, जिसकी विशेषता औज़ारों, हथियारों और अन्य उपकरणों के लिये लोहे के व्यापक उपयोग से सम्बन्धित थी।

➢ **मुख्य विशेषताएँ:** हल की फाल जैसे लोहे के औजारों और हथियारों का उपयोग, कृषि का विकास और बस्तियों की स्थापना में वृद्धि आदि।

प्रमुख स्थल:

गंगा-यमुना घाटी: यहाँ से चित्रित धूसर मृद्भांड मिले है जो प्रारंभिक वैदिक संस्कृति से जुड़े है।

✓ **तमिलनाडु:** यह स्थल काले रंग के बर्तन, पाषाण वृत्त और डोलमेनॉइड जैसे समाधि स्थलों के लिए प्रसिद्ध है।

महापाषाण संस्कृति

➢ **मुख्य विशेषताएँ:** पत्थर के वृत्त, स्तूप और अस्थिकलश में दफ़नाने की प्रथा।

➢ **प्रमुख स्थल:**

✓ **आदिचनल्लूर (तमिलनाडु):** लोहे की वस्तुएँ, सोने के मुकुट, कलश समाधि स्थल।

✓ **पैयमपल्ली (तमिलनाडु):** काले-लाल रंग के मृद्भांड और लौह उपकरण।

✓ **कोडुमनाल (तमिलनाडु):** गड्ढे में समाधि स्थल, कलश समाधि स्थल, कक्ष समाधि स्थल।

✓ **ब्रह्मगिरि (कर्नाटक):** पत्थर के वृत्त में समाधि स्थल, नवपाषाण काल से महापाषाण काल में परिवर्तन।

✓ **हिरेबेनकल (कर्नाटक):** दक्षिण भारत का सबसे बड़ा महापाषाण स्थल।

✓ **मास्की (कर्नाटक):** प्रथम स्थल जहाँ "अशोक" नाम का उल्लेख मिला।

✓ **जोरवे (महाराष्ट्र):** तांबे के औजारों और कृषि आधारित बस्तियों के प्रमाण।

ToppersNotes Unleash the topper in you

- ✓ **चंद्रावल्ली (कर्नाटक):** महापाषाण बस्तियाँ, तांबे और लौह उपकरण।
- ✓ **जुनापानी (महाराष्ट्र):** पत्थर के वृत्त और महापाषाण काल की कब्रें।
- ✓ **गुफकराल (कश्मीर):** नवपाषाण से महापाषाण काल का संक्रमण, प्रारंभिक कृषि के प्रमाण।
- ✓ **राजन कोल्लूर (कर्नाटक):** डोल्मेन और स्तूप दफन।
- ✓ **नागार्जुनकोंडा (आंध्र प्रदेश):** स्तूप दफन, डोल्मेन और लौह उपकरण।

प्राचीन भारत में मृद्भांड (मिट्टी के बर्तनों) की विभिन्न संस्कृतियाँ

- ➢ **गेरूए रंग के मृद्भांड (2600 – 1200 ईसा पूर्व):** ये ग्रामीण संस्कृति से जुड़े हुए **मृद्भांड** है जो तांबे के भंडारों के साथ मिले है; प्रमुख स्थल – उत्तर प्रदेश और हरियाणा
- ➢ **काले और लाल रंग के मृद्भांड (2600 – 1000 ईसा पूर्व):** ये चाक पर निर्मित **मृद्भांड है** जिन पर चित्रकारी की गई है; प्रमुख स्थल – मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र (जोरवे) है।
- ➢ **चित्रित धूसर मृद्भांड (1200 – 600 ईसा पूर्व):** ये प्रारंभिक वैदिक संस्कृति से संबद्ध है। प्रमुख स्थल – हस्तिनापुर, भगवानपुरा और अतरंजीखेड़ा
- ➢ **उत्तरी काले चमकदार मृद्भांड (700 – 200 ईसा पूर्व):** ये शहरीकरण से संबद्ध चमकदार काले मृद्भांड है। प्रमुख स्थल – पाटलिपुत्र और तक्षशिला
- ➢ **गेरूए रंग से रंगे लाल मृदभांड (300 ईसा पूर्व – 200 ईस्वी):** ये भंडारण के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मृदभांड है। प्रमुख स्थल – विदर्भ क्षेत्र, गुजरात और आंध्र प्रदेश
- ➢ **काले और पीले मृदभांड(200 ईसा पूर्व – 300 ईस्वी):** ये साधारण उपयोग के लिए निर्मित किये गये मृदभांड है। प्रमुख स्थल – मध्य और दक्षिण भारत
- ➢ **गुप्त कालीन मृद्भांड (300 – 600 ईस्वी):** ये मुद्रांकित डिज़ाइन वाले उत्तम लाल मृदभांड है। प्रमुख स्थल – मथुरा, नालंदा, उज्जैन और कौशांबी

प्रागैतिहासिक काल से श्रमण परंपराओं तक विकसित भारत का प्रारंभिक इतिहास समाज, राजनीति और दर्शन के उस क्रमिक विकास को दर्शाता है, जिसने मौर्य और गुप्त जैसे महान साम्राज्यों का आधार निर्मित किया। इस युग में स्थापित सांस्कृतिक विविधता और वैचारिक गहराई जैसे मूल्य आज भी भारतीय पहचान और विरासत के जीवंत स्तंभ बने हुए हैं।

2 CHAPTER सिंधु घाटी सभ्यता

- सिंधु घाटी सभ्यता, जिसे हड़प्पा संस्कृति के नाम से भी जाना जाता है, तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के आसपास भारत और पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी हिस्सों में फली-फूली थी। यह भारतीय उपमहाद्वीप में शहरीकरण के पहले चरण का प्रतीक है।
- यह सभ्यता धीरे-धीरे लगभग 7000 ईसा पूर्व के आसपास पाकिस्तान के बलूचिस्तान में स्थित मेहरगढ़ जैसे नवपाषाणकालीन गाँवों में विकसित हुई।

हड़प्पा संस्कृति के चरण

चरण	स्थल	विशेषताएँ
प्रारंभिक हड़प्पा	हड़प्पा, कोट दिजी, आमरी	किलेबंदी, ग्रिड आधारित नगर योजना, प्रारंभिक व्यापार तंत्र का विकास और शिल्पकला में विशेषीकरण।
संक्रमण काल	कुनाल, धोलावीरा, हड़प्पा	शिल्प कौशल में बढ़ती विशेषज्ञता, संगठित सिंचाई प्रणाली, आंशिक रूप से मानकीकृत संग्रह या मिट्टी के बर्तनों की डिज़ाइन और आकार।
परिपक्व हड़प्पा	मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, कालीबंगा, धोलावीरा	पूर्ण स्तर का शहरीकरण, लेखन की शुरुआत, वस्तुओं में एकरूपता, पूर्ण रूप से विकसित व्यापार।
उत्तर हड़प्पा	हड़प्पा, सिसवाल, रोजड़ी, रंगपुर (कब्रिस्तान स्थल)	कुछ स्थलों का पतन और परित्याग, पशुपालन की प्रवृत्ति का उभरना।

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

विश्व की सबसे प्राचीन नगरीय सभ्यताओं में से एक सिंधु घाटी सभ्यता विशाल क्षेत्र में फैली हुई थी जिसमें वर्तमान भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के कुछ हिस्से शामिल थे।

- **उत्तर में:** शोर्तुगई (अफ़ग़ानिस्तान)
- **पश्चिम में:** सुत्कागेंडोर (पाकिस्तान–ईरान सीमा)
- **पूर्व में:** आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश, भारत)
- **दक्षिण में:** दैमाबाद (महाराष्ट्र, भारत)

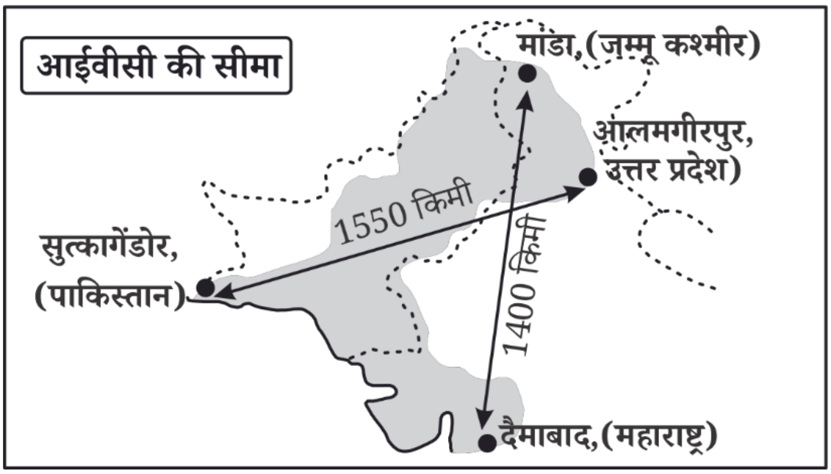

प्रमुख हड़प्पा स्थल और उनकी विशेषताएँ

स्थल	स्थान	नदी / जल स्रोत	प्रमुख विशेषताएँ/ प्राप्त अवशेष/पुरातात्विक वस्तुएँ
हड़प्पा	पंजाब (पाकिस्तान)	रावी	➢ यह सबसे पहले खोजा गया सिंधु घाटी सभ्यता स्थल था जहाँ से निम्नलिखित अवशेष प्राप्त हुए है - ✓ दो पंक्तियों में छह अन्नागार, लाल बलुआ पत्थर से निर्मित पुरुष धड़, पाषाण-निर्मित लिंग और योनि के प्रतीक, मातृदेवी की मूर्तियाँ, पासे, कब्रिस्तान R-37 आदि
मोहनजोदड़ो	सिंध (पाकिस्तान)	सिंधु	➢ दाह संस्कार के बाद कब्रों में दफनाने के साक्ष्य ➢ विशाल अन्नागार ➢ विशाल **स्नानागार** (सबसे बड़ा भवन) ➢ पशुपति और मातृदेवी की मुहरें ➢ **कांस्य की "नर्तकी " और भैंस की मूर्ति** ➢ दाढ़ी वाले पुरुष की प्रतिमा ➢ नियोजित दुर्ग और निचला नगर
चन्हुदड़ो	सिंध (पाकिस्तान)	सिंधु	➢ विशेष शिल्प उत्पादन केंद्र: मनका-निर्माण, शंख काटना, धातु कार्य, मुहर और बाट-निर्माण जैसी गतिविधियों का केंद्र ➢ कुत्ते के पंजे के निशान वाली ईंट ➢ टेराकोटा बैलगाड़ी मॉडल ➢ कांस्य की खिलौना गाड़ी
लोथल	गुजरात	भोगवा–साबरमती संगम	➢ गोदामों और बंदरगाह वाले डॉकयार्ड (गोदी बाड़ा) ➢ धान की भूसी के अवशेष ➢ स्त्री-पुरुष की संयुक्त कब्र ➢ अन्य स्थलों के विपरीत यहाँ दुर्ग को निचले नगर से किसी भी दीवार द्वारा पृथक नहीं किया गया था ➢ आंतरिक दीवारों वाला किलाबंद नगर ➢ हाथीदांत की तराजू
सुरकोटड़ा	गुजरात	शादी कौर नदी	➢ अंडाकार कब्रें ➢ मिट्टी के बर्तनों में दफनाने के प्रमाण ➢ घोड़े की अस्थियों के प्रमाण
कालीबंगा	राजस्थान	घग्घर	➢ चूड़ी बनाने का कारखाना ➢ जुते हुए खेत के साक्ष्य ➢ ऊँट की अस्थियों के प्रमाण ➢ अग्नि वेदियाँ ➢ कांस्य से बनी बैल की मूर्ति

बनावली	हरियाणा	रंगोई नदी	➢ पूर्व, परिपक्व और उत्तर हड़प्पा चरण की संयुक्त विशेषताएँ ➢ अंडाकार बस्तियाँ ➢ जौ के साक्ष्य ➢ लाजवर्द (लैपिस लाजुली) ➢ अग्नि वेदियाँ ➢ अरीय गलियाँ ➢ व्यवस्थित जलनिकासी का अभाव
धोलावीरा	गुजरात	लूणी नदी	➢ यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल ➢ अद्वितीय जल-संग्रहण और वर्षा-जल निकासी प्रणाली ➢ मेगालिथिक/महापाषाणकालीन पत्थर के घेरे ➢ विशाल जलाशय ➢ पत्थर की वास्तुकला ➢ प्राचीन शिलालेखयुक्त पट्टिका ➢ तीन भागों (गढ़, मध्य नगर, निचला नगर) में किलेबंदी ➢ चट्टानों को काटकर उत्खनन
रोपड़	पंजाब	सतलुज नदी	➢ स्वतंत्रता के बाद पहला उत्खनन ➢ कुत्ते और मनुष्य का संयुक्त कब्रिस्तान ➢ अंडाकार गड्ढों में कब्रें ➢ तांबे की कुल्हाड़ी
सुत्कागेंडोर	सिंध (पाकिस्तान)	दश्त नदी	➢ राख से भरा हुआ मिट्टी का पात्र ➢ तांबे की कुल्हाड़ी ➢ मिट्टी की चूड़ियाँ और मृदभांड ➢ प्रारंभ में यह बेबीलोन से जुड़ा बंदरगाह शहर था लेकिन बाद में तटीय उत्थान के कारण समुद्र से कट गया।
राखीगढ़ी	हरियाणा		➢ सबसे बड़ा ज्ञात सिंधु घाटी सभ्यता स्थल ➢ लगभग 2016 में दो टीले खोजे गए ➢ हड़प्पा सभ्यता के तीनों चरणों (पूर्व, परिपक्व, उत्तर) के प्रमाण
रंगपुर	गुजरात	मदार	➢ पूर्व एवं परिपक्व हड़प्पा कालीन अवशेष ➢ पूर्व हड़प्पाकालीन पीले और धूसर रंग के मिट्टी के बर्तन
आलमगीरपुर	उत्तर प्रदेश	हिंडन	➢ उत्तर हड़प्पा चरण ➢ तांबे की टूटी हुई ब्लेड ➢ नांद (trough) पर कपड़े के निशान
कोट-दीजी	सिंध (पाकिस्तान)	सिंध	➢ मिट्टी की ईंटों और पत्थरों से की गई किलेबंदी ➢ अच्छी तरह पकाई गई लाल और हल्की पीली मिट्टी के मृदभांड जिन पर सींग वाले देवता, पीपल के पत्ते और मछली की शल्क (फिश-स्केल) की आकृतियाँ बनी हुई है।

आमरी	सिंध (पाकिस्तान)	सिंध	➢ पूर्व हड़प्पाकालीन बस्ती ➢ संक्रमणकालीन संस्कृति ➢ गैंडे के जीवाश्म/अवशेष
मंडी	हरियाणा	साहिबी/साबी	➢ उत्तर हड़प्पा चरण ➢ ग्रामीण हड़प्पा जीवन का प्रतिबिंब जिसमें मिट्टी के बर्तनों, कच्ची ईंट की संरचनाओं और आत्मनिर्भर कृषि के प्रमाण मिलते है
दैमाबाद	महाराष्ट्र	प्रवर	➢ सारथी और रथ, बैल, हाथी एवं गैंडे आदि की कांस्य प्रतिमाएँ ।

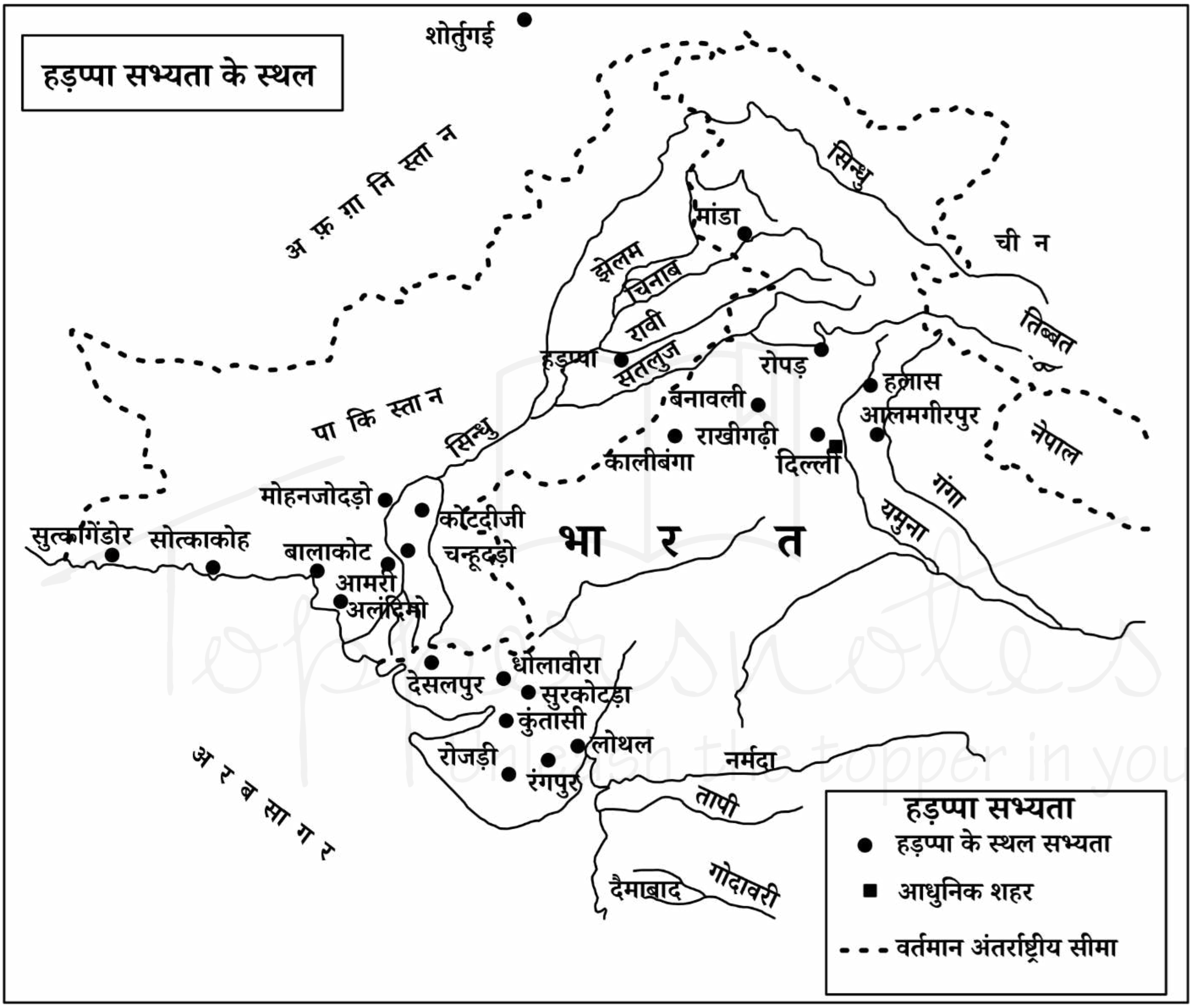

नगर नियोजन और संरचनाएँ

➢ हड़प्पा नगरों में सुनियोजित ग्रिड प्रणाली को अपनाया गया जिसमें सड़कें परस्पर समकोण पर काटती थी ।

➢ **नागरिक अवसंरचना (Civic Infrastructure):**

✓ नगर दो हिस्सों में विभाजित थे → **निचला नगर** जहाँ आम लोग रहते थे और **दुर्ग** जहाँ सार्वजनिक भवन और अन्नागार बनाए गए थे।

✓ **मोहनजोदड़ो** के **विशाल स्नानागार** का उपयोग सम्भवतः धार्मिक शुद्धिकरण सम्बन्धी अनुष्ठानों के लिए किया जाता था।

- ✓ **हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में** पाए गए **अन्नागारों** का उपयोग अनाज भंडारण के लिए किया जाता था।
- ✓ **कालीबंगा** में घर दीवारों से घिरे होते थे जिनमें अक्सर बाहर से प्रवेशयोग्य कमरे भी होते थे ताकि राहगीर भी इनका उपयोग कर सके।
- ✓ **जल निकासी प्रणाली**– जल निकासी व्यवस्था सभी घरों को ईंटों और गारे से बनी सड़क की नालियों से जोड़ती थी।
- ✓ **दुर्ग** कच्ची ईंटों के ऊँचे चबूतरे पर बनाया जाता था, जो निचले नगर से भौतिक रूप से अलग होता था।

आस्था और धार्मिक प्रथाएँ

- **धर्मनिरपेक्ष सभ्यता:** हड़प्पा सभ्यता को अक्सर धर्मनिरपेक्ष माना जाता है। यहाँ की धार्मिक मान्यताओं का पता मुख्यतः **लिंग , योनि** और **मातृ देवी** की मूर्तियों जैसे प्रतीकों से चलता है।
- यहाँ किसी भी मंदिर का प्रमाण नहीं मिला है तथा पूजा-पद्धति का अनुमान मूर्तियों और प्रतिमाओं से ही लगाया गया है।
- **पशुपति मुहर :**इसमें पशुओं से घिरी हुई एक तीन सिर वाली आकृति दिखाई गई है, जिसकी व्याख्या आदि-शिव (Proto-Shiva) के रूप में की गई है।
- **पशुपूजा** और **अग्नि वेदियों का उपयोग** धार्मिक अनुष्ठानों में महत्वपूर्ण था।

हड़प्पा लिपि

- यह भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे प्राचीन लिपि मानी जाती है जिसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है ।
- यह लिपि चित्रात्मक **(Pictographic)** प्रकृति की थी, जिसमें लगभग 250 से 400 चिन्ह होते थे और यह **दाएँ से बाएँ** लिखी जाती थी।
- इसका उपयोग मुख्यतः मुहरों पर वस्तुओं और स्वामित्व को चिह्नित करने के लिए किया जाता था।

कृषि और पशुपालन

- **कृषि** आजीविका **का मुख्य आधार थी** जहाँ **गेहूँ, जौ, धान और बाजरा** जैसी फसलें उगाई जाती थीं।
- रंगपुर और लोथल से **धान की खेती के प्रमाण** मिले हैं, जबकि बनावली से **हल के** साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। किसानों से कर के रूप में भी अनाज लिया जाता था।
- **पशुपालन:** लोगों ने गाय-बैल, भैंस, बकरी, भेड़, सूअर, कुत्ते और बिल्लियों को पालतू बनाया। पशुपालन लोगों का मुख्य व्यवसाय था ।
- **सिंचाई व्यवस्था:** नहरों और कुओं, दोनों का उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता था।
- **बनावली (हरियाणा)** से मिट्टी के बने **हल के** साक्ष्य मिले हैं जो कृषि उपकरणों के ज्ञान को दर्शाते हैं।
- **कालीबंगा (राजस्थान)** विश्व में जुते हुए खेत के सबसे प्राचीन साक्ष्य के लिए प्रसिद्ध है।
- **शोर्तुगई (अफगानिस्तान)** में नहरों से सिंचाई के साक्ष्य मिले हैं, जो योजनाबद्ध कृषि को दर्शाते हैं।

व्यापार और वाणिज्य

- हड़प्पावासी **मेसोपोटामिया** जैसे क्षेत्रों के साथ बड़ी मात्रा में व्यापार करते थे, जिसमें **कपास, मनके, टेराकोटा मूर्तियाँ और सोना आदि** शामिल था।
- **वस्तु-विनिमय प्रणाली (Barter system)** का उपयोग होता था, क्योंकि धातु मुद्रा उपलब्ध नहीं थी।
- **आयात:** सोना, टिन, जेड (Jade), और तांबा
- **निर्यात:** तांबा, सोना, कपड़े, मनके और लाजवर्द

वस्त्र और आभूषण

- हड़प्पावासियों को कपास और रेशम के वस्त्रों का ज्ञान था।
- कपास और ऊन की कताई बड़े पैमाने पर की जाती थी।
- कार्नेलियन, जैस्पर, क्रिस्टल, स्टेटाइट, तांबा, कांसा, सोना, शंख, फैयांस, टेराकोटा और पकी हुई मिट्टी से मणि और आभूषण बनाए जाते थे।
- पीली चैल्सेडोनी को आग में पकाकर कार्नेलियन के लाल रंग का निर्माण किया जाता था।
- मेसोपोटामिया के उत्खनन से सिंधु मनकों के निर्यात का पता चलता है।
- फरमाना कब्रिस्तान (हरियाणा) में शवों को आभूषणों के साथ दफ़नाने के साक्ष्य मिले हैं।

हड़प्पा सभ्यता का पतन

- सिंधु घाटी सभ्यता के पतन का विषय इतिहासकारों और पुरातत्त्वविदों के बीच लंबे समय से विवादित रहा है।
- इसके पतन के पीछे कई कारण माने जाते हैं और संभावना है कि आंतरिक तथा बाह्य कारकों के संयोजन ने इस महान सभ्यता को समाप्त किया हो।
  - ✓ **जलवायु परिवर्तन:** वर्षा में कमी और नदियों के मार्ग बदलने से कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
  - ✓ **प्राकृतिक आपदाएँ:** भूकंप, बाढ़ और सम्भावित सुनामी ने बस्तियों को नुकसान पहुँचाया।
  - ✓ **व्यापार में गिरावट:** व्यापार मार्गों में व्यवधान, विशेष रूप से मेसोपोटामिया के साथ, ने अर्थव्यवस्था को कमजोर कर दिया।
  - ✓ **आर्यों का आगमन:** संभवतः इंडो-आर्यों के प्रवासन ने समाज में बड़े बदलावों को प्रेरित किया लाया।
  - ✓ **आंतरिक संघर्ष:** सामाजिक विघटन, राजनीतिक अस्थिरता और केंद्रीकृत सत्ता के विखंडन से व्यवस्था कमजोर हो गई।
  - ✓ **शहरी जीवन का पतन:** नगरों का परित्याग और शहरी नियोजन में गिरावट देखने को मिली।
  - ✓ **कला-कौशल में कमी:** हस्तशिल्प और तकनीकी उत्पादन में कमी आर्थिक पतन का संकेत देती है।

विश्व की सबसे प्राचीन ज्ञात सभ्यता **सुमेरियन सभ्यता** है, जो लगभग 4500 ईसा पूर्व **मेसोपोटामिया (वर्तमान इराक)** क्षेत्र में विकसित हुई।

हालाँकि हड़प्पा सभ्यता (सिंधु घाटी सभ्यता) की लिपि और शासन प्रणाली अब भी रहस्यपूर्ण बनी हुई है लेकिन इसकी **नगर-योजना और सांस्कृतिक धरोहर** ने भारत की शहरी परंपरा की नींव रखी। यह एक प्राचीन, नवाचारी और शांतिप्रिय समाज का परिचायक है।

3 CHAPTER

वैदिक काल (1500–600 ईसा पूर्व)

- वैदिक युग (1500-600 ईसा पूर्व) भारत में कांस्य युग के उत्तरार्ध और लौह युग के प्रारंभिक वर्षों तक अस्तित्व में रहा, जो सिंधु घाटी सभ्यता के पतन और लगभग 600 ईसा पूर्व सिंधु-गंगा के मैदानों में द्वितीय शहरीकरण के उदय के बीच का समय था ।
- कृषि अधिशेष, शिल्प और व्यापार के विस्तार और बढ़ती जनसंख्या के कारण गंगा घाटी में नए नगरों का निर्माण हुआ जो भारतीय शहरीकरण के द्वितीय चरण का प्रतिनिधित्व करता है ।
- 'वैदिक' शब्द की उत्पत्ति वेदों से हुई है, जो आर्यों के रूप में पहचाने जाने वाले लोगों द्वारा रचित पवित्र ग्रंथों का संग्रह है।
- वैदिक काल के प्रमुख चरण
  - ✓ प्रारंभिक वैदिक काल/ ऋग्वैदिक काल (1500–1000 ईसा पूर्व)
  - ✓ उत्तर वैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व)

वैदिक काल के अध्ययन के स्रोत

वैदिक ग्रंथ	**प्रारंभिक वैदिक ग्रन्थ: ऋग्वेद उत्तर वैदिक ग्रन्थ: सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद**	आर्य संस्कृति और समाज के मूलभूत ग्रंथ
ईरानी ग्रंथ	**जेंदा अवेस्ता (14वीं शताब्दी ईसा पूर्व)**	इंडो-ईरानी भाषा बोलने वालों की भूमि और देवताओं का उल्लेख,; वेदों से भाषाई समानताएँ
यूनानी ग्रंथ	**इलियड और ओडिसी (होमर, 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व)**	अप्रत्यक्ष प्रभाव और हिंद-यूरोपीय संबंधों का उल्लेख
अभिलेख	**कासाइट अभिलेख (1600 ईसा पूर्व), मितानी अभिलेख (1400 ईसा पूर्व)**	आर्यों के पश्चिम की ओर प्रवासन के प्रमाण,; इराक-सीरिया क्षेत्रों में वैदिक देवताओं का उल्लेख
पुरातात्त्विक स्थल	**अंद्रोनोवो संस्कृति (2000–1150 ईसा पूर्व)**	आर्यों के प्रवासन के प्रमाण,; हिंदुकुश क्षेत्र से जुड़ाव

इंडो-आर्य: पहचान और सिद्धांत

- 'इंडो-आर्यन' शब्द इंडो-ईरानी भाषा बोलने वालों को संदर्भित करता है।
- 'आर्य' शब्द 'अर' (खेती करना) से बना है, जिसका अर्थ है कुलीन/श्रेष्ठ या साथी।

➢ आर्यों की उत्पत्ति से संबंधित प्रमुख सिद्धांत
  - ✓ यूरोपीय सिद्धांत: आर्यों का आगमन काला सागर के उत्तर से हुआ। (विलियम जोन्स, मॉर्गन)
  - ✓ मध्य एशियाई सिद्धांत : इंडो-ईरानियों के साथ भाषाई संबंधों पर ज़ोर दिया गया (मैक्स मुलर, मेयर)
  - ✓ आर्कटिक सिद्धांत : तिलक ने वेदों में छह महीने के दिन-रात के उल्लेख के आधार पर आर्कटिक को आर्य-भूमि बताया।
  - ✓ तिब्बती सिद्धांत: दयानंद सरस्वती ने ऋग्वेद में वर्णित वनस्पति और जीव-जंतुओं के आधार पर आर्यों का मूलस्थान तिब्बत को बताया।
  - ✓ भारतीय सिद्धांत: सम्पूर्णानंद और ए.सी. दास ने सप्त सिंधु को आर्यों का मूल निवास स्थान बताया। उनका मानना है कि संस्कृत भाषा मूल आर्य भाषा के सबसे नज़दीक है।

प्रारंभिक वैदिक काल (1500–1000 ईसा पूर्व)

1. भूगोल
  - ✓ आर्य 'सप्त सैंधव ' प्रदेश में निवास करते थे, जो सात नदियों (झेलम, व्यास, चिनाब, रावी, सतलुज, सरस्वती, सिंधु) की भूमि थी।
  - ✓ इसका विस्तार आधुनिक अफ़गानिस्तान, पंजाब और हरियाणा तक था ।
  - ✓ वेदों में **सरस्वती नदी को सबसे पवित्र** माना गया है और **सिंधु नदी का सर्वाधिक उल्लेख** हुआ है।
  - ✓ ब्रह्मवर्त सरस्वती घाटी को ,हिमवंत हिमालय को और मुंजवंत हिंदू कुश को संदर्भित करता था।

2. राजनीतिक जीवन
  - ✓ प्रमुख जनजातियाँ: **भरत, मत्स्य, यदु, पुरु**
  - ✓ **राजन (कबीला प्रमुख):** कबीले का मुखिया जिसे गोपति या गोप (गायों का रक्षक) कहा जाता था।
  - ✓ राजा का पद वंशानुगत होता था, परन्तु कभी-कभी सभा द्वारा चुनाव भी होता था।
  - ✓ **महिलाओं को सभा और विदथ** में भाग लेने का अधिकार था।
  - ✓ प्रमुख सभाएँ
    - **सभा:** कुलीन बुजुर्ग
    - **समिति:** आम लोगों की सभा
    - **विदथ:** धार्मिक अनुष्ठान और प्रशासन से जुड़ा मंच
    - **गण:** कबीलाई संगठन
  - ✓ यहाँ कोई न्यायिक संरचना नहीं थी तथा चोरी रोकने के लिए गुप्तचर व्यवस्था प्रचलित थी ।

3. अधिकारी और उनके कार्य
  - ✓ **पुरोहित:** मुख्य पुजारी, कबीलाई मुखिया को प्रेरित करने वाला।
  - ✓ **सेनानी:** शस्त्र विद्या में कुशल सेनापति।
  - ✓ **व्रजपति:** चरागाहों और युद्ध इकाइयों का मुखिया।

4. सैन्य व्यवस्था
  - ✓ इस समय स्थायी सेना नहीं थी तथा सैन्य पूर्ति के लिए आदिवासी इकाइयों (व्रत, गण, ग्राम, सारधा) पर निर्भर थे।
  - ✓ **दशराज्ञ युद्ध:** भरत जनजाति के **सुदास** ने रावी नदी पर दस जनजातियों के संघ को पराजित किया। बाद में भरतवंशी पुरुओं के साथ मिलकर कुरु (पांडवों और कौरवों के पूर्वज) बने।
  - ✓ आर्यों ने दासों (दास) और दस्युओं (संभवतः मूल निवासी) को परास्त किया।
  - ✓ आर्य घोड़े से खींचे जाने वाले रथों और सुरक्षात्मक कवच (वर्मन) के उपयोग के लिए प्रसिद्ध थे ।

Toppersnotes Unleash the topper in you

5. **समाज**
- ✓ प्रारंभिक वर्ण व्यवस्था, रंग (वर्ण) पर आधारित थी – आर्य (गोरे) बनाम दस्यु (काले)।
- ✓ इस समय जाति व्यवस्था कठोर नहीं थी जिसमें व्यवसाय परिवर्तन भी संभव था।
- ✓ वैदिक समाज में दास प्रथा (विशेषकर स्त्रि दास) भी विद्यमान थी।
- ✓ वर्ण व्यवस्था का वर्णन ऋग्वेद के पुरूष सूक्त (दसवाँ मंडल) में मिलता है।

6. **परिवार और विवाह**
- ✓ कुल : परिवार की इकाई, जिसका मुखिया कुलप होता था।
- ✓ गृह: घर का संचालन गृहपति करता था तथा पत्नी को सपत्नी कहा जाता था।
- ✓ विश : कुलों का समूह, जबकि कई विश मिलकर जन नामक इकाई का निर्माण करते थे।
- ✓ एकपत्नी विवाह प्रमुख था लेकिन बहुपत्नी प्रथा और बहुपति प्रथा भी प्रचलित थी।
- ✓ ऋग्वेद में पुत्रियों की बजाय पुत्रों को वरीयता दी गई ।

7. **महिलाओं की स्थिति**
- ✓ समाज पितृसत्तात्मक होते हुए भी अपेक्षाकृत समतावादी था।
- ✓ महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने, पति चुनने और पुनर्विवाह का अधिकार था।
- ✓ प्रमुख वैदिक महिला ऋषि- अपाला, विश्ववारा, घोषा, लोपामुद्रा।
- ✓ सती प्रथा, पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियाँ नहीं थीं और विवाह की आयु लगभग 16–17 वर्ष थी।

8. **अर्थव्यवस्था**
- ✓ ऋग्वैदिक काल में पशुपालन मुख्य व्यवसाय था तथा पशु ही धन का मापदंड होते थे।
- ✓ इस समय वस्तु-विनिमय प्रणाली प्रचलित थी तथा गाय विनिमय की प्रमुख वस्तु थी। भूमि पर कोई निजी स्वामित्व नहीं था।
- ✓ जंगल को जलाकर कृषि कार्य किया जाता था तथा लकड़ी के हल (लंगला, सुरा) प्रचलन में थे।
- ✓ मुख्य फसलें: जौ (यवम्) और गेहूँ (गोधूम)
- ✓ मवेशियों द्वारा खींची जाने वाली चरखी से जल निकाला जाता था।
- ✓ अन्य पेशे: सूत कातना (सिरी), बढ़ई का काम (तक्षण), रथ निर्माण
- ✓ बली : एक प्रकार का कर/उपहार
- ✓ ज्ञात धातुएँ: अयस् (तांबा/कांसा), हिरण्य (सोना)

9. **धर्म**
- ✓ इस समय **प्रकृति पूजा** और **यज्ञ** का विशेष महत्व था।
- ✓ ईश्वरवाद: प्रत्येक ऋचा/स्तुति में एक सर्वोच्च देवता।
- ✓ प्रमुख देवता
  - **इंद्र:** इनके लिए पुरंदर (किले तोड़ने वाले), वृत्रहन (वृत्र का वध करने वाला) जैसे नाम प्रचलित थे तथा इनका उल्लेख सबसे अधिक (250 सूक्त) बार हुआ है।
  - **अग्नि:** ये देवताओं और मनुष्यों के बीच मध्यस्थ के रूप में प्रसिद्ध थे तथा लगभग 200 सूक्त अग्नि को समर्पित है।
  - **वरुण:** ये जल के देवता है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) को बनाए रखते हैं।
  - **सोम:** ये एक प्रकार का मादक दैवीय पेय पदार्थ था।
  - **अन्य देवता: रुद्र, यम, पुषण, विष्णु, मरुत**
- ✓ **प्रमुख देवियाँ: अदिति-** अनंतता की देवी, **उषा-** भोर (सूर्योदय) की देवी, **सावित्री-** गायत्री मंत्र की देवी, **सिनीवाली:** उर्वरता की देवी|

Unleash the topper in you

उत्तर वैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व)

➢ उत्तर वैदिक काल की जानकारी **ऋग्वैदिक युग के बाद रचित ग्रंथों** से मिलती है। इस काल में समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति और धर्म संबंधित बड़े परिवर्तन हुए।

1. भूगोल

- ✓ उत्तर-पश्चिमी भारत में प्रभुत्व स्थापित करने के बाद आर्य पूर्व की ओर बढ़े और बंगाल क्षेत्र तक विस्तार किया।
- ✓ उनका मुख्य निवास स्थान शुरू में कुरु-पांचाल क्षेत्र के आसपास केंद्रित था, जिसमें हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ जैसे महत्वपूर्ण शहर शामिल थे। हस्तिनापुर, कुरु वंश की राजधानी माना जाता था।
- ✓ उत्तर वैदिक ग्रंथों में भारत को तीन भागों में बाँटा गया- आर्यावर्त्त (उत्तर), मध्यदेश (मध्य), दक्षिणापथ (दक्षिण)।

2. राजनीति

- ✓ राजकीय शक्ति में वृद्धि के साथ जनजातीय सभाओं का पतन हुआ तथा विदथ सभा पूरी तरह से समाप्त हो गई।
- ✓ जन (जनजाति) से जनपद (क्षेत्र) की अवधारणा का विकास हुआ तथा ।
- ✓ इस समय नगरों के विकास का उल्लेख भी मिलता है जहाँ हस्तिनापुर, कौशांबी आदि प्रारंभिक नगरीय स्थल थे।
- ✓ राजाओं की उपाधियाँ: सम्राट , एकराट, अहिलभुवनपति
- ✓ प्रमुख अनुष्ठान
  - अश्वमेध यज्ञ : घोड़े का यज्ञ
  - राजसूय यज्ञ : राजाभिषेक
  - वाजपेय यज्ञ : राजकीय रथ दौड़

3. समाज

- ✓ वर्ण व्यवस्था औपचारिक हो गई, जिसमें चार वर्ण थे- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
- ✓ द्विज (दो बार जन्मे): ये उन तीन उच्च वर्णों (क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) के लिए प्रयुक्त शब्द था जो उपनयन संस्कार का अधिकार रखते थे ।
- ✓ शूद्र और महिलाएँ: इन्हें वैदिक शिक्षा और गायत्री मंत्र के जप से वंचित रखा गया ।
- ✓ चांडाल: ये चतुर्वर्ण व्यवस्था से बाहर (अछूत) थे
- ✓ रथकार (रथ बनाने वाले): इन्हें विशेष धार्मिक स्थान प्राप्त हुआ।

4. महिलाओं की स्थिति

- ✓ इस समय महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई तथा सभाओं और अनुष्ठानों में उनकी भागीदारी नगण्य हो गई। इनकी भूमिका केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित हो गई।
- ✓ सती प्रथा और बाल विवाह जैसी प्रथाओं का जन्म हुआ तथा ऐतरेय ब्राह्मण में बेटियों को हीन बताने के साथ ही इन्हें दुःख का कारण भी बताया गया है।
- ✓ महान दार्शनिक स्त्रियाँ (अपवाद): गार्गी, मैत्रेयी

5. अर्थव्यवस्था

- ✓ कृषि का विस्तार: पंजाब में गेहूँ एवं गंगा-यमुना के मैदान में धान की खेती की जाने लगी।
- ✓ लौह धातु (कृष्ण अयस्): 1200 ईसा पूर्व के आसपास से 800 ईसा पूर्व तक इसके औजार व्यापक रूप से प्रचलन में आए।
- ✓ उत्तर वैदिक काल में मिश्रित कृषि प्रचलित थी।
- ✓ इस समय भूमि सामूहिक स्वामित्व के अधीन थी एवं गृहपति उसका संचालन करता था।

- ✓ व्यापार श्रेणियों (गिल्ड्स) के माध्यम से किया जाता था जहाँ श्रेणी प्रमुख को श्रेष्ठि कहा जाता था।
- ✓ विनिमय प्रणाली: विनिमय के लिए निष्क का उपयोग किया जाता था।
- ✓ कर वसूलना अनिवार्य कर दिया गया, मुख्यतः वैश्यों से। कर संग्राहक को 'भागदुघ' एवं कोषाध्यक्ष को 'संगृहीत्री' कहा जाता था ।

6. कला और शिल्प

- ✓ मिट्टी के बर्तनों के प्रकार - चित्रित धूसर मृदभांड, काले और लाल मृदभांड प्रचलित थे। पक्की हुई ईंटों का प्रयोग आम तौर पर ज्ञात नहीं था।
- ✓ मुख्य शिल्प- मिट्टी के बर्तन (कुलाला), कताई (ऊर्ण सूत्र), लोहार (कर्मार)
- ✓ व्यवसाय: नाविक, रसोइया, सुनार, ज्योतिषी, हाथी प्रशिक्षक (अथर्ववेद)

7. धर्म

- ✓ इंद्र और अग्नि देवता का स्थान प्रजापति, विष्णु और रुद्र देवताओं ने ले लिया।
- ✓ कर्मकांड तीव्र हो गए और दक्षिणा (दान) का महत्व बढ़ गया।
- ✓ मूर्तिपूजा और जाति आधारित देवताओं का उद्भव हुआ। पूषण को अब शूद्रों का देवता माना जाने लगा।
- ✓ उपनिषदों ने कर्मकांड की अति का विरोध किया और आत्मा (आत्मन्) पर बल दिया।
- ✓ बलिदान और दक्षिणा के रूप में कभी-कभी भूमि का एक हिस्सा भी ब्राह्मणों को दे दिया जाता था।
- ✓ अत्यधिक कर्मकांड और असंतोष के कारण आगे चलकर जैन धर्म और बौद्ध धर्म का उदय हुआ।

8. शिक्षा और साहित्य

- ✓ वैदिक शिक्षा मुख्यतः पुरुषों के लिए थी और यह मौखिक परंपरा पर आधारित थी।
- ✓ इस काल में दर्शन, साहित्य और विज्ञान के विषयों का विकास हुआ।
- ✓ उपनिषद : 'उपनिषद' का शाब्दिक अर्थ है – 'पास बैठना'। यह गुरु (आचार्य) और शिष्य (विद्यार्थी) के बीच दार्शनिक संवाद और शिक्षाओं का संकलन है।
- ✓ कुल 108 उपनिषद हैं, जिनमें से 13 सबसे महत्वपूर्ण माने जाते हैं।
  - **मुंडकोपनिषद:** सभी उपनिषदों में सबसे बड़ा , जिसमें "सत्यमेव जयते" का उल्लेख है।
  - **छांदोग्य उपनिषद:** पहले तीन आश्रमों का वर्णन।

वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य भारतीय आर्यों का सबसे प्राचीन पवित्र साहित्यिक अभिलेख है, जिसकी रचना 1500-600 ईसा पूर्व के दौरान वैदिक संस्कृत में हुई थी। सदियों से मौखिक रूप से प्रसारित यह भारतीय दर्शन धर्म और संस्कृति का आधार है, जो प्राचीन भारतीय इतिहास और समाज को समझने का एक प्रमुख स्रोत है।

- ➢ 'वेद' शब्द 'विद्' धातु से बना है जिसका अर्थ है "ज्ञान"।
- ➢ **चार वेद एवं इनकी प्रमुख विशेषताएँ :**

वेद	**मुख्य विषय / विशेषताएँ**
ऋग्वेद	➢ यह ब्रह्मांड की उत्पत्ति का वर्णन करने वाला सबसे प्राचीन ग्रंथ है ➢ इसमें 10 मंडल/अध्याय थे : II–VII (सबसे पुराने), I और X (बाद में जोड़े गए); दसवें मंडल में पुरूष सूक्त है, जिसमें चार वर्णों का उल्लेख है। ➢ आठवां मंडल – कण्व कुल के सूक्त/मंत्र ; नौवां मंडल – सोम सूक्त। ➢ विभिन्न कवि-परिवारों ("पारिवारिक पुस्तकें") द्वारा देवताओं (अग्नि, इंद्र, मित्र, वरुण) के भजनों का संग्रह

	➢ वैदिक मन्त्रों की मौखिक जप परंपरा (मंत्रोच्चार) को यूनेस्को की अमूर्त विरासत के रूप में अंकित किया गया है ➢ इसमें मुंडा और द्रविड़ भाषाओं के कई शब्द शामिल हैं। ➢ ऋग्वेद की मूल लिपि ब्राह्मी है और 'स्तूप' शब्द का पहली बार प्रयोग इसीमें किया गया है।
सामवेद	➢ यह ऋग्वैदिक सूक्तों/मंत्रों का संगीतमय (सामन = राग) रूप है। ➢ इसे भारतीय राग और रागिनियों की नींव माना जाता है। ➢ इसमें ध्रुपद शैली का उल्लेख है जिसे बाद में तानसेन ने लोकप्रिय बनाया।
यजुर्वेद	➢ इस वेद में गद्य और पद्य में यज्ञ के अनुष्ठान सूत्र उल्लिखित है। ➢ दो शाखाएँ- श्वेत (शुक्ल यजुर्वेद) में केवल मंत्र हैं और कृष्ण यजुर्वेद में मंत्रों के साथ व्याख्यात्मक गद्य भी है
अथर्ववेद	➢ इसमें ताबीज, शकुन-अपशकुन और तंत्र-मंत्र जैसी अवधारणाओं का उल्लेख किया गया है। ➢ इस वेद में कृषि, शिल्प और पशुपालन से संबंधित व्यावहारिक ज्ञान का भी वर्णन मिलता है। ➢ प्राचीन औषध विज्ञान : बीमारियों के इलाज और जीवन संबंधी अनुष्ठानों का वर्णन।

सम्बद्ध ग्रंथ

- **ब्राह्मण ग्रंथ :** इनमें यज्ञ और अनुष्ठानों की विधियों का विस्तृत वर्णन है। सबसे प्रसिद्ध **शतपथ ब्राह्मण है,** जो **यजुर्वेद** से संबद्ध है।
- **आरण्यक :** इनमें वन साधना, रहस्यवादी दर्शन आदि का उल्लेख किया गया है।
- **उपनिषद :** इनमें गुरू और शिष्य के बीच संवाद के रूप में दार्शनिक विचारों का संकलन है।
  - ✓ 1657 ई. में **दारा शिकोह** ने इनका फारसी में अनुवाद करवाया।
  - ✓ कुल **108 उपनिषद** हैं, जिनमें से 13 को सबसे प्रमुख माना गया है।
- **वेदांग:** इनकी संख्या 6 है -
  - ✓ **शिक्षा :** शब्दों के उच्चारण और शिक्षा का ज्ञान।
  - ✓ **छंद :** संस्कृत श्लोकों में प्रयुक्त छंद-विधान।
  - ✓ **व्याकरण :** संस्कृत व्याकरण का ज्ञान।
  - ✓ **निरुक्त :** शब्दों की उत्पत्ति और व्याख्या।
  - ✓ **ज्योतिष :** खगोल और ज्योतिष से संबंधित ज्ञान।
  - ✓ **कल्प :** अनुष्ठान और धर्मसूत्रों का ज्ञान।

शंकराचार्य के अनुसार वेदांत दर्शन के तीन प्रमुख ग्रंथों को 'प्रस्थानत्रयी' कहा जाता है – **उपनिषद, ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता।**

वैदिक युग ने वेदों की रचना, वर्ण व्यवस्था के विकास और शासन-व्यवस्था एवं राजनीतिक सभाओं के प्रारंभिक स्वरूपों के माध्यम से भारत के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्वरूप को आकार दिया। इस युग की समृद्ध विरासत हिंदू दर्शन, रीति-रिवाजों और सामाजिक मानदंडों को प्रभावित करती रही है जिससे यह भारतीय सभ्यता की आधारशिला बन गया है।

4 CHAPTER बौद्ध धर्म और जैन धर्म

बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उद्भव

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध और जैन धर्म का उदय भारतीय इतिहास की एक युगांतरकारी घटना थी जिससे उत्तर-वैदिक काल में बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उदय नास्तिक संप्रदायों के रूप में हुआ।
- **उद्भव के कारण:**
  - ✓ वैदिक कर्मकांड और रूढ़िवादिता के प्रति बढ़ती शंका होना ।
  - ✓ क्षत्रियों द्वारा ब्राह्मण प्रभुत्व का विरोध।
  - ✓ वर्ण व्यवस्था की कठोरता के कारण समाज में असमानता पैदा हुई |
  - ✓ पशु बलि (विशेषकर गौ-हत्या) का विरोध क्योंकि इससे कृषि आधारित अर्थव्यवस्था प्रभावित हो रही थी।
  - ✓ वैश्यों ने अहिंसा, व्यापार सुगमता और युद्धों को कम करने में रूचि दिखाई।
  - ✓ इन संप्रदायों ने धर्मसूत्रों में उल्लिखित ब्याज पर ऋण देने की मनाही को अस्वीकार कर दिया ।
  - ✓ इन धर्मों द्वारा वर्ण व्यवस्था का विरोध करने के कारण वैश्य वर्ग की सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
  - ✓ संस्कृत भाषा का केवल उच्च्य वर्ग तक सिमित होना |

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म विश्व के महान धर्मों और दर्शनों में से एक है, जिसकी स्थापना गौतम बुद्ध (सिद्धार्थ) ने 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व में की थी।

1. गौतम बुद्ध का जीवन

- ✓ 563 ईसा पूर्व में लुंबिनी (नेपाल) में शाक्य कुल में इनका जन्म हुआ। इनके पिता शुद्धोधन कपिलवस्तु के शासक थे तथा इनकी माता महामाया कोसल की राजकुमारी थी।
- ✓ इनका पालन-पोषण महाप्रजापति गौतमी (प्रथम भिक्षुणी) ने किया था ।
- ✓ इनकी पत्नी का नाम यशोधरा और पुत्र का नाम राहुल था।
- ✓ इनके जीवन के चार दृश्य जिनसे प्रभावित होकर 29 वर्ष की आयु में इन्होंने गृहत्याग (महाभिनिष्क्रमण) किया - वृद्ध व्यक्ति, रोगी, शव और संन्यासी आदि इनको देखकर ये विचलित हो गये थे और इन्ही सवालों के हल खोजने हेतु इन्होने घर त्याग किया था ।
- ✓ बुद्ध ने अलार कलाम और उद्दक रामपुत्त के अधीन तपस्या की। सुभद्दा, गौतम बुद्ध से ज्ञान प्राप्त करने वाले अंतिम व्यक्ति थे।

✓ बुद्ध ने 'क्षणिकवाद' का सिद्धांत प्रतिपादित किया जो यह मानता है कि इस ब्रह्मांड में सब कुछ क्षणिक और नश्वर है।

✓ 35 वर्ष की आयु में बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे इन्हें ज्ञान (निर्वाण) की प्राप्ति हुई और वे सिद्धार्थ गौतम से भगवान **बुद्ध** बन गए। वर्तमान में निरंजना नदी के किनारे स्थित बोधिवृक्ष 5वीं पीढ़ी का है।

2. ज्ञान प्राप्ति के बाद

✓ बुद्ध के प्रथम गुरु आलार कलाम थे,जिनसे उन्होंने संन्यास काल में शिक्षा प्राप्त की।

✓ **प्रथम उपदेश:** सारनाथ में (धर्मचक्र प्रवर्तन); सारनाथ में स्थित अशोक का सिंह स्तंभ इस घटना का प्रतीक है।

✓ बुद्ध ने पाली जो की उस समय की आम भाषा **थी जिसे उन्होंने अपनाया था प्रमुख शिष्य:** आनंद, सारिपुत्त, महामोग्गल्लन और महा कच्चायन

✓ महाप्रजापती गौतमी (बुद्ध की विमाता) को सर्वप्रथम बौद्ध संघ मे प्रवेश मिला और आनंद,बुद्ध का प्रिय शिष्य था।

✓ बुद्ध ने अपने सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिए जिसमे उन्होंने आम जन को माध्यम मार्ग अपनाने पर बल दिया |

✓ 483 ईसा पूर्व में कुशीनगर में 'महापरिनिर्वाण' (मृत्यु) प्राप्त किया।

✓ अपने अनुयायियों के लिए अंतिम उपदेश: "अप्प दीपो भव"/आत्म दीपो भवः (स्वयं के लिए दीपक बनो)

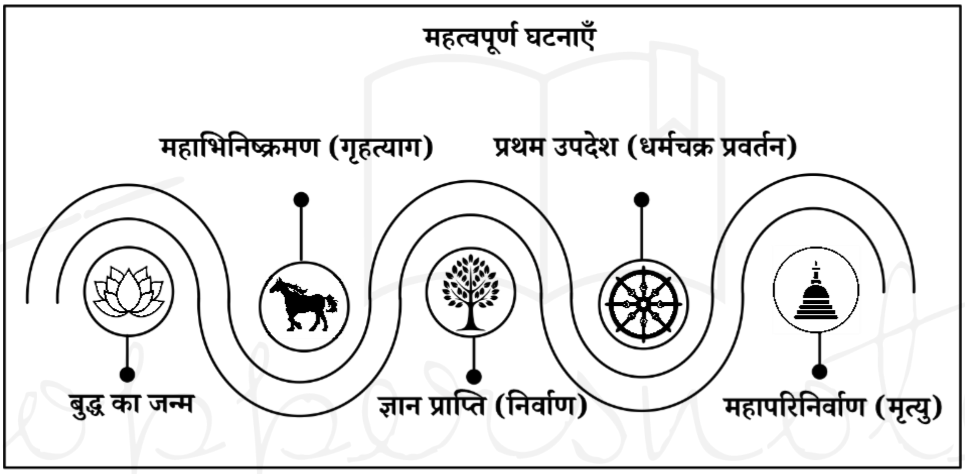

3. बौद्ध धर्म के हीनयान और महायान मतों से संबंधित विभिन्न प्रतीक

घटना	**हीनयान (प्रतीकात्मक रूप)**	**महायान (मूर्तिरूप)**
जन्म	हाथी और कमल को प्रतीक माना	माया का स्वप्न को प्रतीक माना
गृहत्याग (महाभिनिष्क्रमण)	घोड़ा	घोड़े के साथ बुद्ध (भिक्षु वेश में)
ज्ञान प्राप्ति (निर्वाण)	पीपल का वृक्ष	भूमि-स्पर्श मुद्रा
प्रथम उपदेश	धर्मचक्र (आठ तीलियाँ जो अष्टांगिक मार्ग का प्रतीक है) को माना जाता है	धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा को माना जाता है
महापरिनिर्वाण (मृत्यु)	स्तूप	महापरिनिर्वाण मुद्रा – एक करवट लेटे हुए, सिर हथेली पर